मोची का उपहार

चीनी लोककथा

मोची का उपहार

चीनी लोककथा

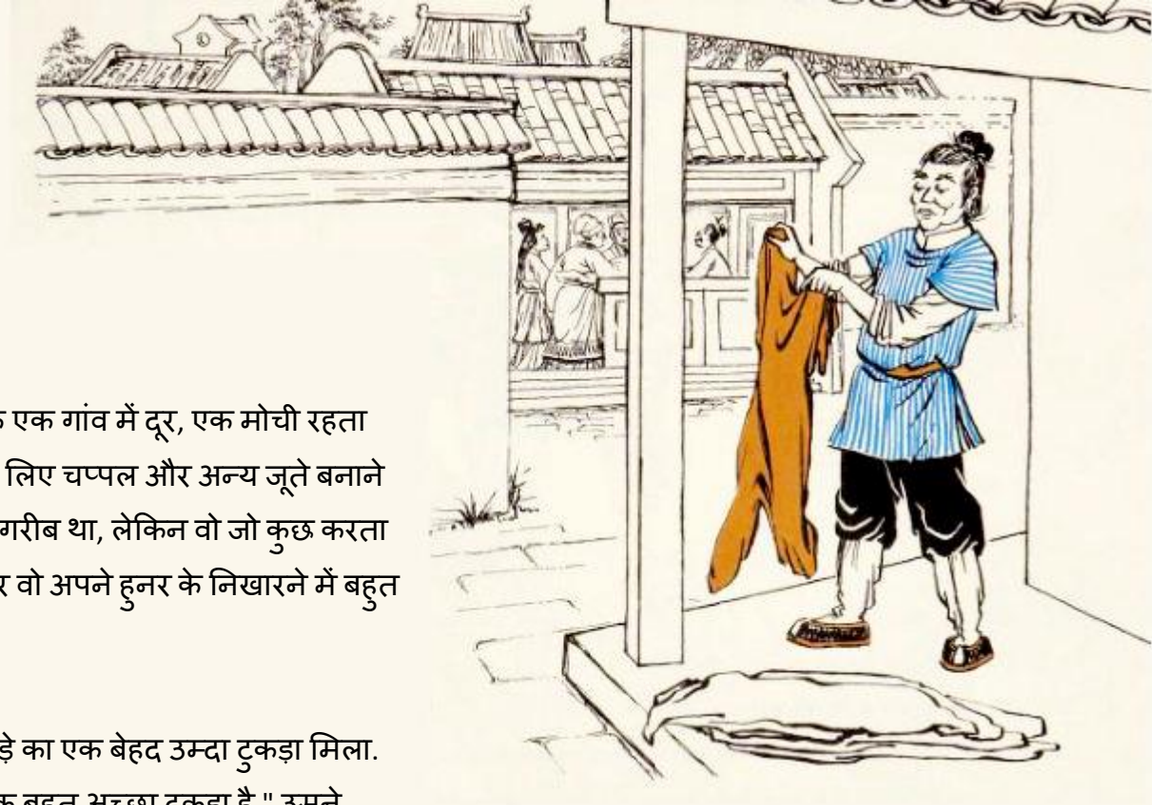

कई साल पहले, चीन के एक गांव में दूर, एक मोची रहता था. वो गांव के लोगों के लिए चप्पल और अन्य जूते बनाने में बहुत कुशल था. वह गरीब था, लेकिन वो जो कुछ करता था वो उसे पसंद था और वो अपने हुनर के निखारने में बहुत मेहनत करता था.

एक दिन मोची को चमड़े का एक बेहद उम्दा टुकड़ा मिला. "आह! चमड़े का यह एक बहुत अच्छा टुकड़ा है," उसने सोचा. "कभी-कभी ही ऐसा चमड़ा मिलता है. मैं उससे एक जोड़ी शिकारी जूते बनाऊंगा."

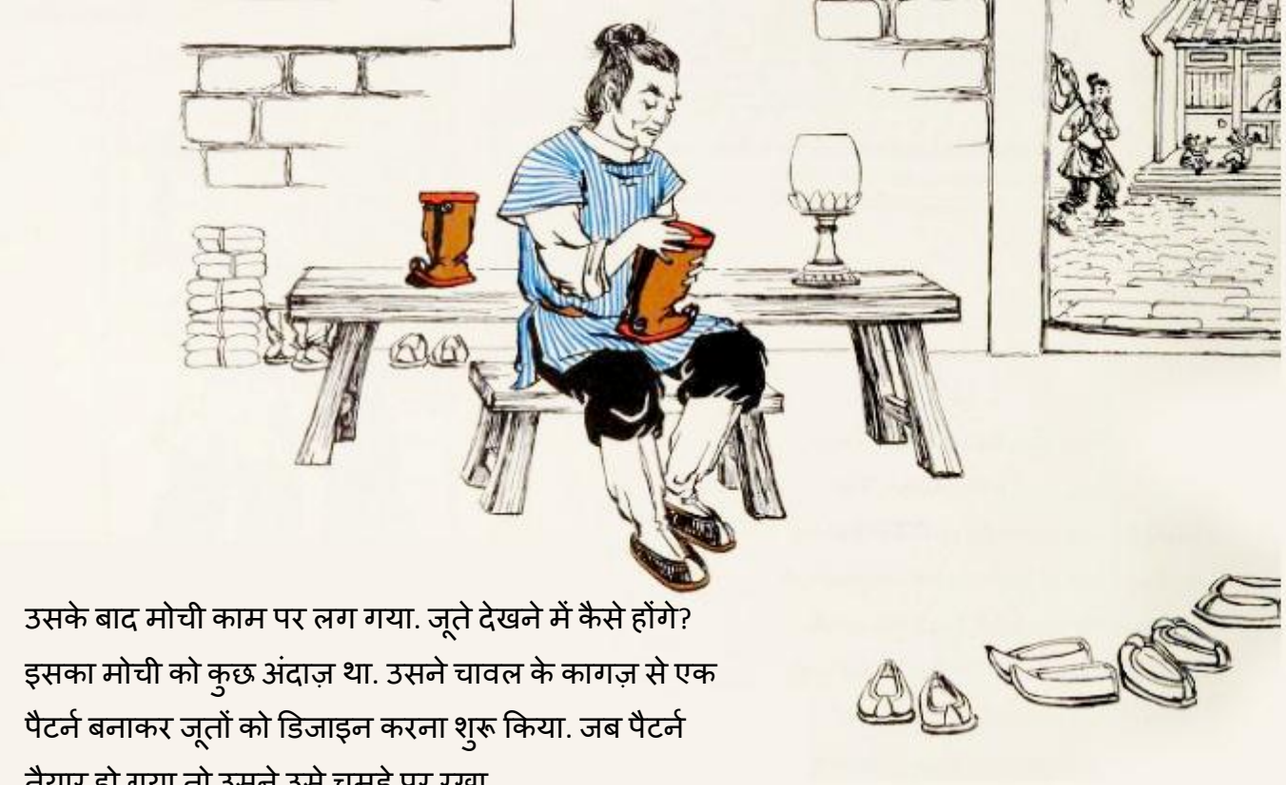

उसके बाद मोची काम पर लग गया. जूते देखने में कैसे होंगे? इसका मोची को कुछ अंदाज़ था. उसने चावल के कागज़ से एक पैटर्न बनाकर जूतों को डिजाइन करना शुरू किया. जब पैटर्न तैयार हो गया तो उसने उसे चमड़े पर रखा.

ध्यान से, उसने चमड़े को पैटर्न के अनुसार काटा और टुकड़ों को एक साथ फिट किया. उसके बाद जूतों ने आकार लेना शुरू किया. मोची ने अपने कौशल और ज्ञान का पूरा उपयोग किया और जूतों की उस जोड़ी बनाने में कड़ी मेहनत की. उसने अपने खाली समय में और रात के शांत घंटों में जूतों पर काम किया.

अक्सर वो अपने काम में इतना तल्लीन रहता था कि सूरज कब उगता और अस्त होता था उसे इस बात की भी कोई सुध नहीं रहती थी.

अंत में जूते बनकर तैयार हुए. मोची ने जूतों पर पॉलिश की. फिर उसने उन्हें दुकान में एक छोटे शेल्फ पर रख दिया. शेल्फ उसके घर के सामने वाले भाग में था. बाहर, चाँद और तारे चमकते रहे और एक उल्लू रात को हूट करता रहा. लेकिन मोची ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया. वह बहुत थक गया था. उसने जो कुछ किया था, वो उससे बहुत खुश था. जूतों को शेल्फ पर रखने के तुरंत बाद वो बिस्तर पर लेटकर सो गया.

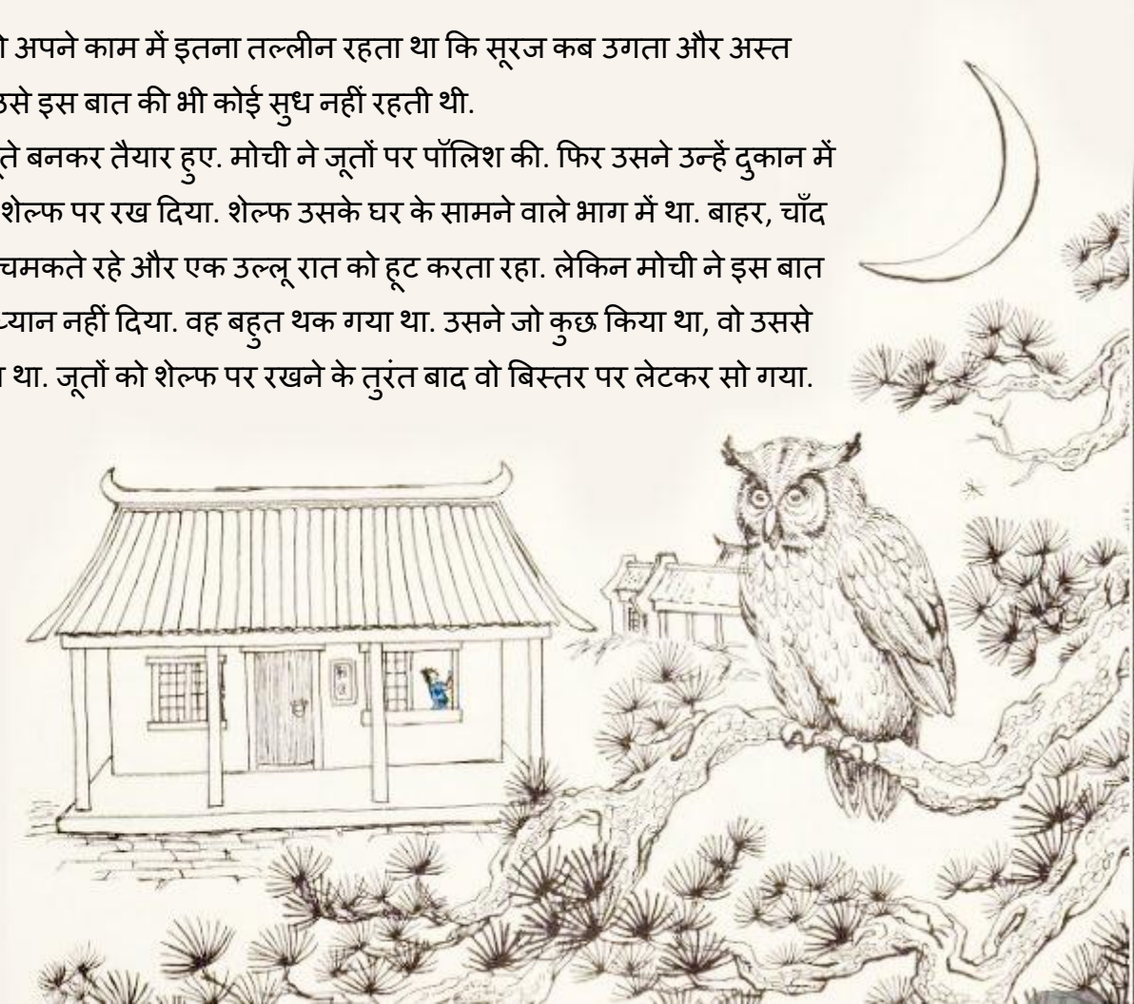

सुबह का खाना बनाने के लिए मोची की पत्नी रोज की तरह उठी. उसे अपने पति की कड़ी मेहनत का कुछ अंदाज़ था और जब उसने देखा कि वह अभी भी सो रहा है तो वो बहुत दबे पांव चली जिससे उसका पति जग न जाए. फिर उसने शेल्फ पर तैयार जूते देखे. वे मजबूत और सुंदर थे. उनकी कारीगरी में कोई दोष नहीं था. और वे देखने में बेहद खूबसूरत थे. "कितनी सुंदर जूतों की जोड़ी है," मोची की पत्नी ने खुद से कहा और फिर वो मुस्कुराई.

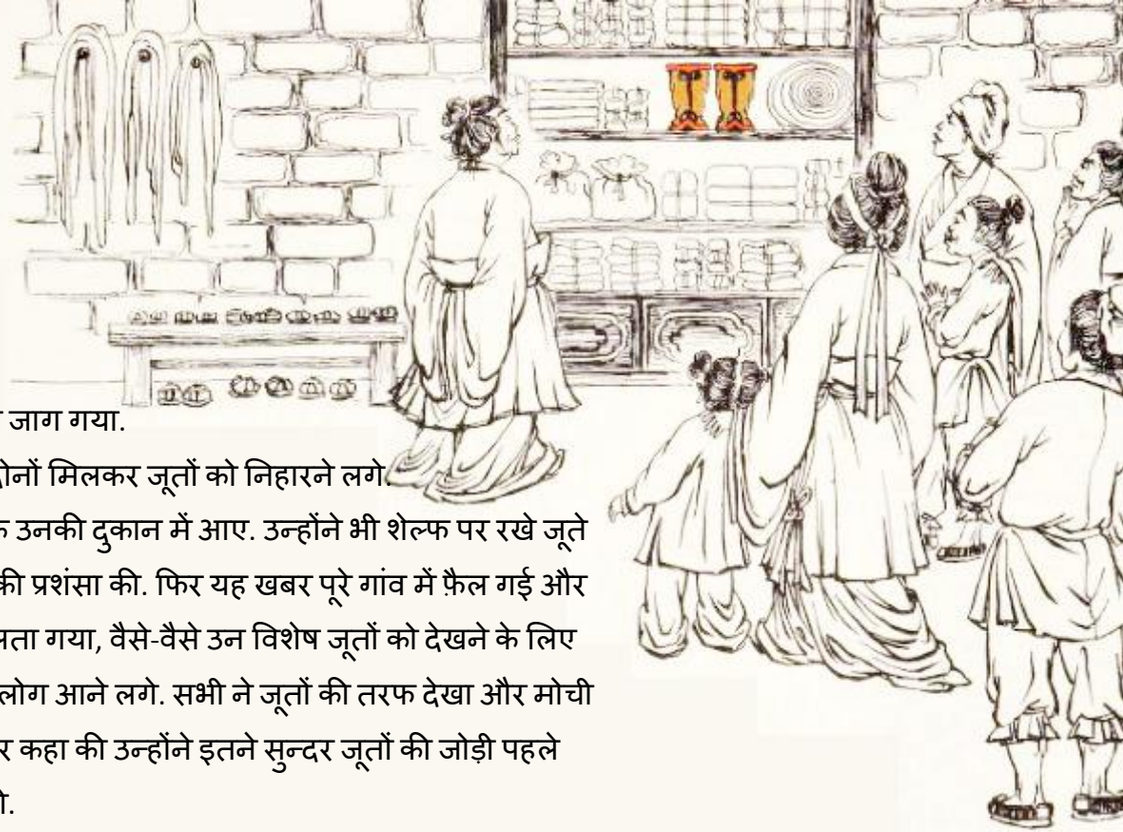

जल्द ही मोची भी जाग गया.

फिर पति-पत्नी दोनों मिलकर जूतों को निहारने लगे.

दिन में कई ग्राहक उनकी दुकान में आए. उन्होंने भी शेल्फ पर रखे जूते देखे. हरेक ने उनकी प्रशंसा की. फिर यह खबर पूरे गांव में फ़ैल गई और जैसे-जैसे दिन ढलता गया, वैसे-वैसे उन विशेष जूतों को देखने के लिए ज्यादा से ज्यादा लोग आने लगे. सभी ने जूतों की तरफ देखा और मोची की तारीफ की और कहा की उन्होंने इतने सुन्दर जूतों की जोड़ी पहले कभी नहीं देखी थी.

फिर रात हुई. अंत में अंतिम ग्राहक भी दुकान से चला गया. अब मोची और उसकी पत्नी अकेले थे. मोची की पत्नी ने एक जूते को उठाया और पति की ओर बड़ी प्रशंसा से देखा. "तुम्हे पता हैं," उसने कहा, "सच में इन जूतों को बेचना बड़े शर्म की बात होगी."

फिर उसकी आँखों में चमक आई. उसने अपने पति की तरफ देखा, और साफ स्वर में कहा,
"आपको यह जूते ले जाकर राजा को भेंट करने चाहिए!"

मोची अपनी पत्नी को विस्मय में घूरता रहा. फिर उसने जूतों की तरफ देखा. सचमुच वे जूते असामान्य रूप से सुंदर थे. उन्हें बड़ी कुशलता से तैयार किया गया था. वो इस तरह से महसूस इसलिए नहीं कर रहा था क्योंकि उसने ही उन्हें बनाया था. वे जूते वाकई में राजा के लायक थे.

"ठीक है!" उसने कहा. "मैं बस यही करूंगा! मैं जूते ले जाऊंगा और उन्हें राजा को भेंट करूंगा."

अगले दिन, मोची अपने बिस्तर से जल्दी उठा और उसने सुबह-सुबह नाश्ता किया. तभी उसकी पत्नी ने एक रेशम के महीन कपड़े में जूते लपेट दिए.

रास्ते में खाने के लिए उसने पति के कोट में एक चावल का केक भी डाला. सब तैयार होने के बाद मोची ने अपने कंधे पर जूते रखे और अपनी पत्नी से अलविदा कहा. फिर वह उस शहर में राजा के महल की ओर निकल पड़ा.

शहर, कई घंटों की पैदल दूरी पर था. आक्रमणकारी जनजातियों और डाकुओं को बाहर रखने के लिए महल एक ऊँची दीवार से घिरा हुआ था. वो दीवार मीलों दूर से दिखाई देती थी.

मोची, शहर के मुख्य द्वार पर गया. गेट पर पहरा देने वाले संतरी ने मोची को देखा, तो उसने अपने भाले की नोक से मोची को अंदर जाने से रोका.

"रुको!" संतरी मोची से कहा. "तुम क्या चाहते हो?" उसने ज़ोर से पूछा. "अपना काम बताओ नहीं तो मैं तुम्हें शहर में प्रवेश करने नहीं दूंगा!" मोची ने संतरी को देखा. "मैं राजा को देने के लिए एक भेंट लाया हूँ," उसने जवाब दिया.

संतरी ने मोची के कंधे पर रखे बंडल को देखा. फिर संतरी थोड़ा मुस्कुराया और उसने अपनी आवाज़ धीमी की. "जब कोई भी व्यक्ति राजा को कोई भेंट देता है," उसने कहा, "तो राजा हमेशा उसे बदले में कुछ देता है. यदि तुम मुझे राजा का दिया एक-तिहाई हिस्सा देने को तैयार हो, तो मैं तुम्हें शहर में घुसने दूंगा."

मोची को पहले तो धक्का लगा. किसी तरह यह उसे झेला. लेकिन कुछ देर के बाद वो संतरी की बात पर सहमत हो गया. फिर संतरी ने उसे तुरंत शहर में प्रवेश करने दिया.

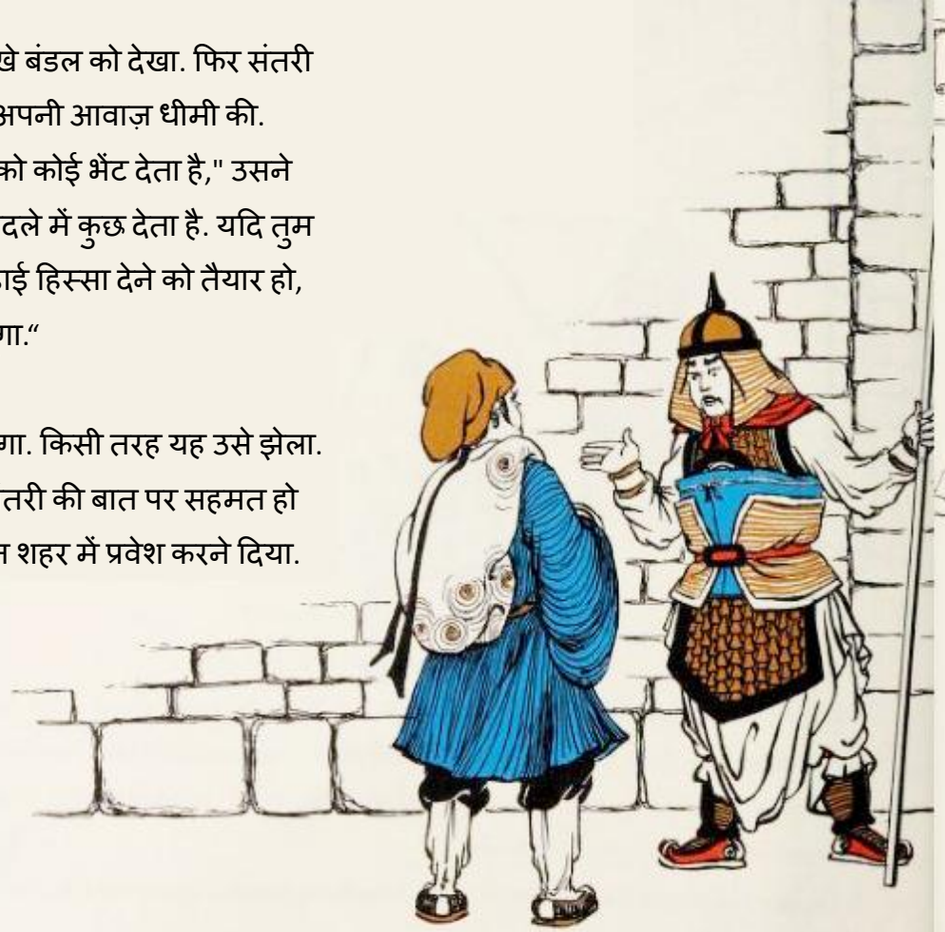

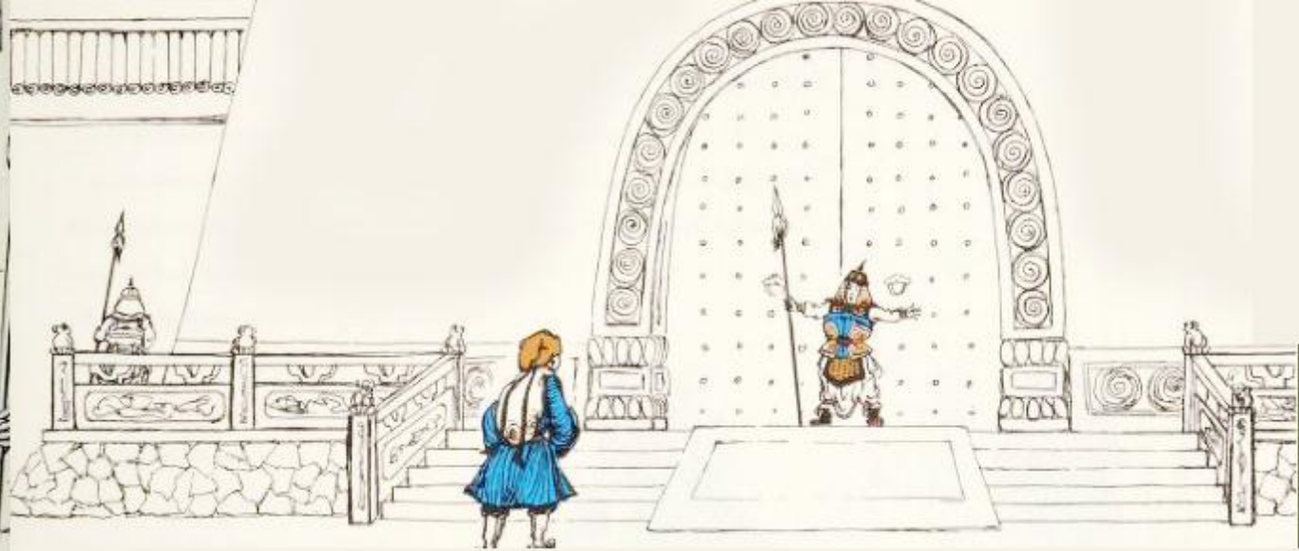

मोची शहर की सड़कों से होकर महल की ओर चला. महल के मैदान के प्रवेश द्वार पर एक दूसरी संतरी पहरा दे रहा था. जब मोची प्रवेश द्वार के पास पहुंचा, तो संतरी ने उसका रास्ता रोका.

"रुको!" उन्होंने दृढ़ स्वर में कहा. "तुम क्या चाहते हो? तुम्हें क्या काम है मुझे बताओ, नहीं तो मैं तुम्हें महल में प्रवेश करने नहीं दूंगा!"

"मैं राजा से मिलना चाहता हूं," मोची ने जवाब दिया. "मेरे पास उन्हें देने के लिए एक उपहार है."

"ओह!" संतरी ने कहा. फिर उसने अपनी आवाज़ नीची की और आगे की ओर झुका. "हर कोई जो महल के प्रवेश द्वार पर आता है, वह राजा से मिलना चाहता है. लेकिन मैं तुम्हें एक शर्त पर अंदर जाने दूंगा. राजा आपको जो दें उसका एक-तिहाई हिस्सा आपको मुझे देना होगा. फिर तुम महल के मैदान में प्रवेश कर पाओगे."

"अरे!" मोची ने सोचा. "यहाँ तो हर कोई एक ठग है! मैं तो बस राजा को एक जोड़ी जूते देना चाहता हूँ." फिर उसने जोर से कहा, "ठीक है, जो भी राजा मुझे देगा उसका एक-तिहाई मैं तुम्हें दे दूंगा." तुरंत, संतरी पीछे हटा और उसने मोची को महल के मैदान में प्रवेश करने दिया. मोची आंगन में और मुख्य हॉल में चला गया. मुख्य हॉल के अंदर दो बड़े दरवाजे थे. तीसरा संतरी दरवाजों पर तैनात था. संतरी ने एक कदम आगे किया और अपना हाथ बढ़ाया.

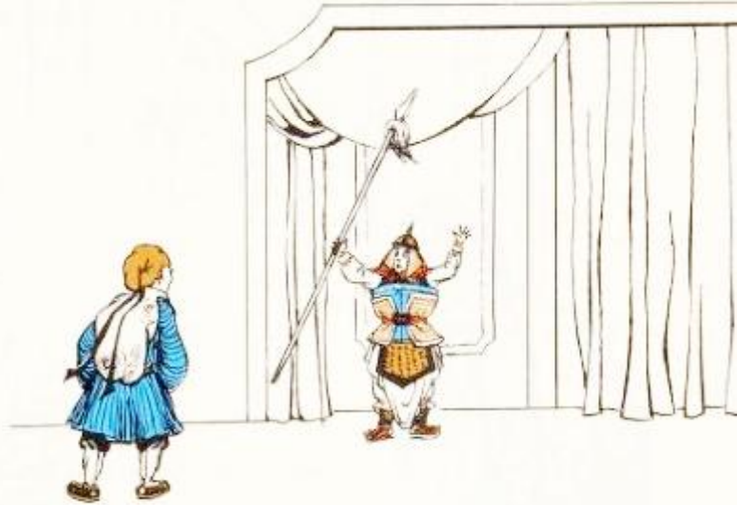

"रुको!" उसने ऊंची आवाज में मोची से कहा. "अपना काम बताओ, नहीं तो मैं तुम्हें राजा के कक्ष में नहीं जाने दूंगा."

"मैं राजा को एक उपहार देने के लिए आया हूं," मोची ने स्पष्ट, स्थिर आवाज़ में जवाब दिया.

"मैं देखता हूं," संतरी ने कहा. जब उसने मोची के कंधे पर रखा बंडल देखा तब उसने फुसफुसा कर कहा.

"हर कोई राजा को भेंट देने के लिए इन दरवाजों से नहीं गुजर सकता है," उसने कहा. "अगर जो भी राजा आपको दे उसका आप मुझे एक-तिहाई देने का वादा करेंगे, तो मुझे दरवाजा खोलने में खुशी होगी और आपको अंदर जाने दिया जाएगा."

इस बार, मोची ने बिना किसी हिचकिचाहट के संतरी को जवाब दिया. "जो कुछ भी राजा मुझे देगा उसका एक-तिहाई मैं आपको देने का वादा करता हूं," उसने कहा. फिर संतरी ने बड़े दरवाज़े को खोला.

मोची ने एक गहरी सांस ली और अपना सिर झुकाया. फिर उसने दहलीज से होकर राजा के कक्ष में प्रवेश किया.
राजा लंबे कक्ष के अंत में एक ऊंचे मंच पर बैठा था. दो नौकर उसके पीछे खड़े थे और लंबे डंडों से धीरे-धीरे पंखे झल रहे थे.
जब मोची, राजा के सामने पहुंचा तो बड़ा दरवाजा उसके पीछे बंद हो गया. राजा ने मोची को करीब आने के लिए इशारा किया. मोची लम्बे डग भरता हुआ लंबे हॉल के अंत में पहुंचा जहाँ राजा बैठा था. उसने अपने कंधे से बंडल को उतारा और उसे नीचे फर्श पर रख दिया. फिर उसने तीन बार अपना सिर झुकाकर राजा का अभिवादन किया.

"तुम कौन हो?" राजा ने मोची से पूछा. "तुम क्या चाहते हो?"
'मैं एक गाँव का मोची हूँ." मोची ने जवाब दिया। उसका सिर अभी भी झुका हुआ था.

"कुछ समय पहले मुझे चमड़े का एक शानदार टुकड़ा मिला. मैंने उस चमड़े से शिकारी जूतों की एक जोड़ी बनाई. मैं जिस गाँव में रहता हूँ, वहाँ हर कोई उन जूतों को देखने आया. सभी ने उनकी प्रशंसा की. उनके जाने के बाद, मेरी पत्नी ने कहा कि वे जूते इतने शानदार थे कि वे केवल किसी राजा के पहनने योग्य थे. हम दोनों उस बात पर सहमत थे. इसलिए मैं उन्हें आपको भेंट करने के लिए आया हूँ."

राजा आगे की ओर झुका. उसने मोची को बंडल खोलते और शिकारी जूतों को प्रदर्शित करते हुए देखा. जूते वास्तव में बेहद सुंदर थे. राजा उठ खड़ा हुआ और मंच से नीचे उतरकर आया. उसने जूतों को घूरकर देखा. उसने अपने हाथों में जूतों को ऊपर उठाया. "वाह!" उसने कहा, "ये जूते वास्तव में अदभुत हैं. मैं देख सकता हूं कि तुम्हारी कारीगरी उच्चतम स्तर की है. तुम्हारी कारीगरी और कौशल की प्रशंसा की जानी चाहिए."

फिर राजा नीचे की सीढ़ी पर बैठ गया और उसने जूते पहनने की कोशिश की. वे न बहुत बड़े थे और न ही बहुत छोटे थे. वास्तव में, उनका एक आदर्श फिट था. राजा उठ खड़ा हुआ. वो अपने सिंहासन पर वापस चला गया. उसने अपने पैरों को थोड़ा ऊपर किया और जूतों को निहारा. फिर वो मोची पर मुस्कुराया.

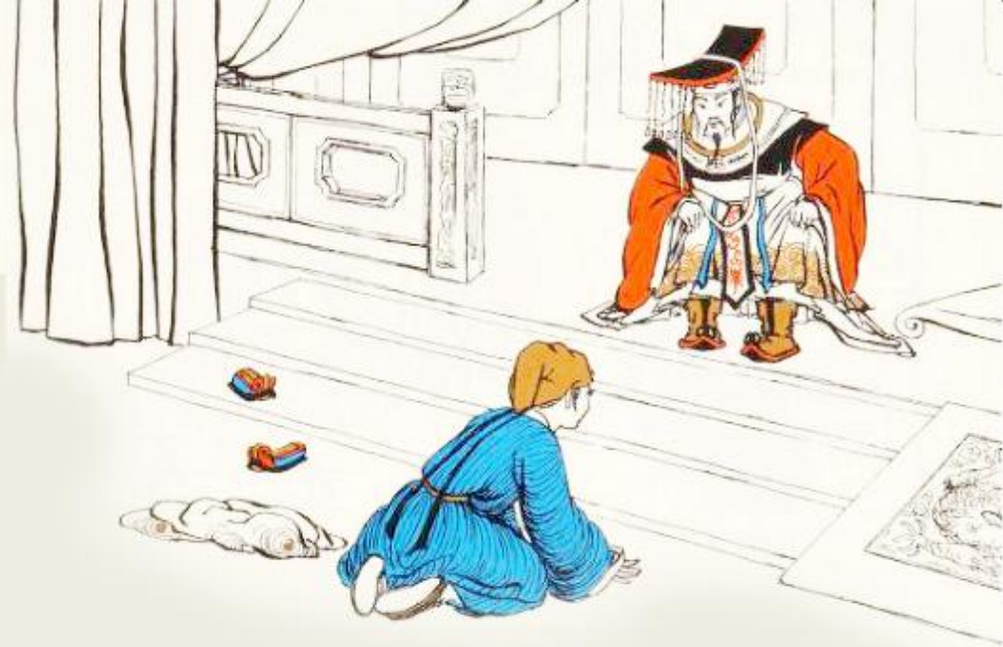

"मैं इन शिकारी जूतों को विनम्रता से स्वीकार करता हूं," उसने कहा. "और, चूंकि यह एक शाही रिवाज है, इसलिए मैं तुम्हें कोई उपहार देना चाहूंगा. तुम जो चाहें वो मुझ से मांग सकते हो."

मोची कुछ देर सोचता रहा. फिर उसने कहा, "आदरणीय महाराज, मैं आपसे यहां उपहार लेने के लिए नहीं आया. आपने मेरे बनाये जूते स्वीकार किये यह मेरे लिए पर्याप्त इनाम है. हालांकि, इनाम देना एक शाही रिवाज है, पर यह आपकी महान कृपा दृष्टि है. मेरी आप से एक ही विनती है. महान राजा कृपाकर एक आदेश जारी करें कि आपका सबसे शक्तिशाली गार्ड मुझे एक लंबी सख्त लकड़ी की छड़ी से निन्यानवे बार पीटे."

राजा को यह सुनकर बड़ा अचरज हुआ. उन्होंने मोची को करीब से देखा. "क्या?" उसने पूछा. "आप चाहते हैं कि मैं एक आदेश जारी करूं कि मेरा सबसे शक्तिशाली गार्ड आपको एक लंबी सख्त लकड़ी की छड़ी से निन्यानवे बार पीटे. निश्चित रूप से आप इससे कुछ बेहतर मांग सकते थे!"

"नहीं!" मोची ने पूरी ईमानदारी से जवाब दिया. "मेरी एकमात्र इच्छा है कि आप मेरे इस अनुरोध को पूरा करें."

"यह वास्तव में एक अजीबोगरीब अनुरोध है," राजा ने खुद से कहा. उसने मोची को अपनी आँखों के कोने से देखा. "पर जब कोई आदमी अपनी बात पर इतना दृढ़ हो तो फिर मैं कौन होता हूँ जो उसके अनुरोध को ठुकराऊँ?"

उसके साथ, राजा ने अपने मुख्य सचिव की ओर देखा. "मैं आदेश देता हूं कि इस मोची को लकड़ी की लंबी छड़ी से निन्यानवे बार पीटा जाये," उन्होंने कहा. "यह पिटाई सबसे शक्तिशाली शाही गार्ड ही लगाए." फिर उन्होंने कहा, "लेकिन गार्ड को सावधान करें कि वह मोची को बहुत ज़ोर से न मारे, नहीं तो मोची को बहुत चोट पहुँचेगी."

"सावधानी बरतने की कोई ज़रुरत नहीं है!" मोची तेज आवाज में बोला. "गार्ड से कहें कि जितनी ज़ोर से संभव हो, वो उतनी ज़ोर से पीटे," उसने मुस्कुराते हुए कहा.

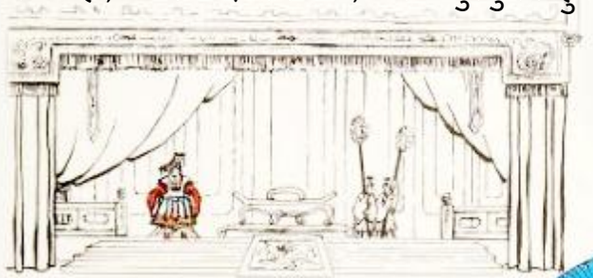

यह सब राजा को बहुत अखर रहा था. लेकिन वो आदेश ज़ारी कर चुके थे और मुख्य सचिव उसके क्रियान्वन की तैयारी कर रहे थे.

फिर मुख्य सचिव, मोची को महल के बाहर, शहर से बीच से होते हुए गेट के बाहर उस स्थान पर ले गए, जहाँ पर पिटाई होने वाली थी.

तीसरे संतरी जिसने मोची को राजा के कक्ष में प्रवेश करने दिया था, अभी भी दो बड़े दरवाजों के बाहर अपनी ड्यूटी पर मौजूद था. मोची ने संतरी की ओर झुकते हुए उससे कहा, "आप मेरे पीछे आयें. मैं आपको राजा के उपहार का एक-तिहाई हिस्सा देना चाहता हूँ."

तीसरे संतरी ने अपने स्थान पर एक वैकल्पिक संतरी को तैनात किया. वैकल्पिक संतरी ने आगे बढ़कर बड़े दरवाजों के पास अपना पद संभाला, जबकि तीसरा संतरी, मोची और मुख्य सचिव के पीछे-पीछे चला. महल के प्रवेश द्वार पर दूसरा संतरी ड्यूटी पर तैनात था. जैसे ही मोची, संतरी के पास से गुज़रा उसने झुककर उससे कहा, "आप मेरे पीछे आएं, राजा ने मुझे जो दिया है मैं आपको उसका एक-तिहाई हिस्सा देना चाहता हूँ, जैसा मैंने आपसे वादा किया था."

दूसरे संतरी ने महल के प्रवेश द्वार पर अपनी जगह एक दूसरे संतरी को तैनात किया.
फिर उसने भी तीसरे संतरी, मोची और मुख्य सचिव का तेजी से पीछा किया.
जब वे शहर के मुख्य द्वार पर पहुँचे, तो पहले संतरी के सामने से गुज़रे.
मोची सीधे उसके सामने गया. वो संतरी के कान में फुसफुसाया,
"आप मेरे पीछे आएं. मैं चाहता हूँ कि राजा ने मुझे जो उपहार दिया है,
उसका एक-तिहाई हिस्सा आपको मिले."
यह सुनकर पहले संतरी ने अपने साथी संतरी से उसका स्थान लेने को कहा.
फिर पहले, दूसरे और तीसरे संतरी, मुख्य सचिव और मोची
के पीछे-पीछे चले.

यह छोटा समूह शहर के फाटक से कुछ दूरी पर एक स्थान पर गया. वहां पर पहले ही एक बेंच स्थापित की गई थी. बेंच के पास दो मजबूत पहरेदार खड़े थे. गार्डों में से एक ने अपने हाथों में लकड़ी का एक लंबा सख्त डंडा पकड़ रखा था.
जैसे ही समूह बेंच पर पहुंचा, मुख्य सचिव ने राजा के आदेश पढ़कर सुनाया.
वो चाहता था कि राजा के आदेश का सही पालन हो. पर व्यक्तिगत रूप से वह यह भी जानने को उत्सुक था कि मोची ने निन्यानवे वारों की पेशकश क्यों की थी.
राजा का मुख्य सचिव बोलने के लिए तैयार हुआ. उसने मोची की तरफ देखा. इससे पहले कि वह कुछ कह पाता मोची बोला.

"सुनिए," मोची ने सचिव से कहा. "अब मैं आपको असलियत बताता हूँ. आज मैं राजा को एक भेंट देने के लिए शहर आया था. इससे पहले कि मैं राजा को देख पाता मुझे इन तीन संतरियों के सामने से गुजरना पड़ा. अंदर जाने के बदले में प्रत्येक संतरी ने मुझ से कुछ मांग की. उन्होंने कहा कि राजा मुझे जो भी इनाम देगा उसका एक-तिहाई मुझे उन्हें देना होगा. राजा ने बक्शीश में मुझे एक लंबी सख्त लकड़ी से निन्यानवे वार का इनाम दिया. मैं इन तीनों संतरियों को दिए अपने वादे को पूरा करना चाहता हूँ. इसलिए अब इनमें से हरेक संतरी को तेंतीस बार मोटे डंडे से कसकर पीटा जाये."

"अच्छा! तो यह बात थी!" मुख्य सचिव ने कहा, और वो खुद पर मुस्कुराया. फिर सचिव आगे बढ़ा और उसने तीनों संतरियों का सामना किया. सचिव ने अपना हाथ उठाया और वो तेज आवाज में बोला.

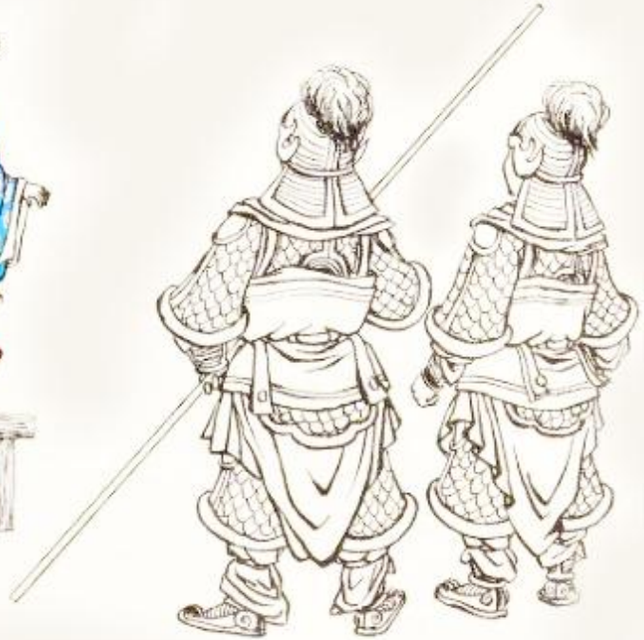

"मैं शाही आदेश का ऐलान करता हूँ, आप में से तीनों संतरियों में से प्रत्येक को तैंतीस-तैंतीस वारों का इनाम मिलेगा. इस आदेश को तुरंत पूरा किया जाना है. और इस बात का भी ध्यान रखें कि प्रहार तेज़ हों," उन्होंने मारने वाले गार्ड की और देखकर जोड़ा, "राजा के आदेश के अनुसार प्रहार जितना तेज़ होगा उतना बेहतर होगा."

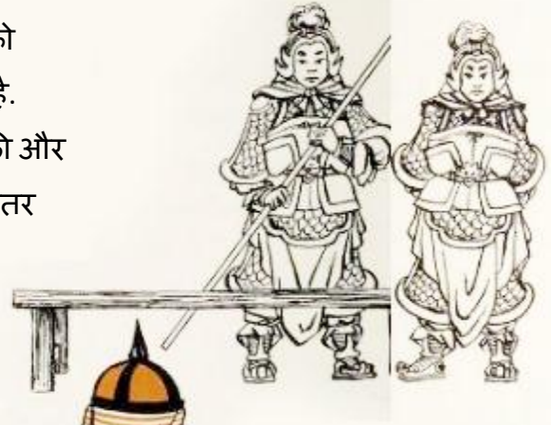

तब तक वहां काफी भीड़ जमा हो गई थी.

लम्बी कठोर लकड़ी की छड़ी वाले गार्ड ने अपनी आस्तीन ऊपर की. गार्ड ने एक संतरी को बेंच के ऊपर झुकने के लिए कहा. यह संतरी शहर के मुख्य द्वार पर तैनात था. गार्ड ने छड़ी से संतरी की पीठ पर तैंतीस वार किए. वो ख़त्म होने के बाद दूसरा संतरी आगे आया. वह भी बेंच पर झुका और उसने भी निन्यानबे वार का एक-तिहाई हिस्सा प्राप्त किया. अंत में तीसरा संतरी, जो राजा के कक्ष के बड़े दरवाज़े के बाहर खड़ा था, उसपर भी गार्ड ने उसके हिस्से के तैंतीस वार किए.

जब शाही फरमान को लागू किया जा रहा था, तब लोगों के बीच यह बात फ़ैल गई. संतरियों की पिटाई को देखने के लिए बड़ी मात्रा में भीड़ इकट्ठी हुई. क्या हो रहा है. जब तक निन्यानबे वार हुए, तब तक लोगों को शिकारी जूतों, मोची और तीनों संतरियों जिन्होंने मोची से रिश्वत की मांग की थी के बारे में सबकुछ पता चल चुका था. जब अंतिम संतरी को आखरी वार मिला, तब सभी लोग चिल्लाए और खुश हुए.

"सच्चा मोची अमर रहे!" लोग ज़ोर से चिल्लाये. "उसने उन लोगों को अच्छा सबक सिखाया जिन्होंने उसे धोखा देने की कोशिश की." और उन्होंने हाथ हिलाकर मोची के की प्रशंसा की.

राजा, अभी भी अपने कक्ष के अंदर था. उसने शहर के बाहर लोगों को चिल्लाते और चीखते हुए सुना.

"इतना शोर क्यों हो रहा है?" उसने पूछा.

"शहर के फाटकों के बाहर इतना हंगामा कौन कर रहा है?"

राजा ने तुरंत महल से बाहर झांका और वो शहर को घेरने वाली पत्थर की दीवार की सीढ़ियों के ऊपर चढ़ा. वह दीवार के मुख्य द्वार के ऊपर पहरेदार के पास गया और उसने नीचे इकट्ठी हुई भीड़ को देखा. भीड़ के पास उसने अपने मुख्य सचिव को सिर हिलाते हुए और मोची को मुस्कुराते हुए देखा.

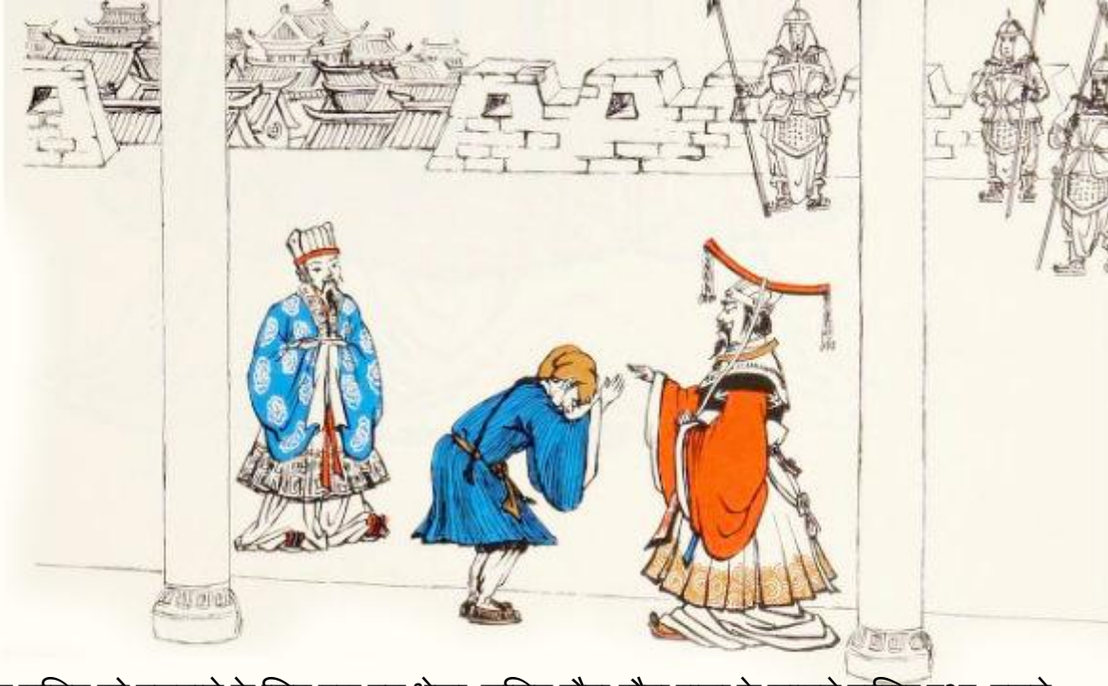

राजा ने मुख्य सचिव को बुलवाने के लिए एक दूत भेजा. सचिव दौड़ा-दौड़ा राजा के सामने हाज़िर हुआ. उसने राजा को तीनों संतरियों और कैसे उन्होंने उस भोले मोची को धोखा देने की कोशिश की थी के बारे में बताया. राजा की आंखें चमक उठीं और वो हंसने लगा. "इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मोची ने इस तरह का एक अजीब अनुरोध किया," उन्होंने कहा. "और कोई आश्चर्य नहीं कि वह चाहता था कि संतरियों को जमकर सजा मिले." राजा ने मोची को उसके सामने हाज़िर होने का आदेश दिया. जब मोची उसके पास पहुंचा तो राजा ने उसके कंधे पर थपथपाया. "तुमने बिल्कुल सही काम किया," उन्होंने कहा.

उसके बाद मोची अपने घर गया
और वो चैन की नींद सोया.

समाप्त